Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Review Paper

संत कबीर के काव्य में धर्मनिरपेक्षता और जीवन मूल्य

डॉ. मो. मजीद मियाँ

Assistant Professor and Post Doctoral Scholar, Shree Agrasen Mahavidyalaya, Uttar Dinajpur, West Bengal, India

Corresponding Author: * डॉ. मो. मजीद मियाँ

सारांश

मध्यकालीन उत्तर भारत मुस्लिम आक्रमणकारियो के लगातार आक्रमण से उद्वेलित हो उठा था। ठीक इसी समय दक्षिण भारत मे उसके मूल ब्रम्ह की नव्य व्याख्या करने के प्रयत्न चल रहे थे। बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात आठवी शताब्दी मे शंकराचार्य ने वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की और अद्वेतवाद का प्रचार किया। सैद्धांतिक दृष्टि से शंकराचार्य के एकेत्ववाद मे संकीर्णता का अभाव है और समाज को एकता के सूत्र मे बांध देने की शक्ति है। परंतु देखा जाए तो व्यावहारिक दृष्टि से वह सफल न हो सका। इसके पश्चात शंकराचार्य के अद्वैतवाद को आधार मानकर आगे दक्षिण मे चार मुख्य मतो की स्थापना हुई। रामानुजाचार्य का विशिष्टद्वैतवाद, निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद, विष्णुस्वामी शुद्धाद्वैतवाद और मध्वाचार्य का द्वैतवाद। यह दार्शनिक वाद परस्पर भिन्न होते हुए भी मूलरुप मे एक दुसरे के पुरक थे और यह धार्मिक एवम दार्शनिक व्याख्याए किसी न किसी रुप मे समग्र भारत मे फैली हुई थी। देखा जाए तो पुरे भारत मे भक्ति आंदोलन को जन्म देने का श्रेय इन दार्शनिको को ही है। इतिहास इस बात का गवाह है कि दक्षिण भारत की यह धार्मिक आंदोलन अपनी मूल चेतना मे अखिल भारतीय सांस्कृतिक नव-चेतना का ही नया रुप था. दक्षिण भारत के इन जनवादी धार्मिक आंदोलन ने विभिन्न धर्मो, मतो, सम्प्रदायो मे विभाजित सम्पूर्ण भारतीय जनता को पुनरू एकसूत्र मे बांधने का काम किया।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 02-07-2024
- ✓ **Accepted:** 05-08-2024
- ✓ **Published:** 17-09-2024
- ✓ **MRR:2(9):**2024;04-07
- ✓ **©2024, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

मो. मजीद मियाँ. संत कबीर के काव्य में धर्मनिरपेक्षता और जीवन मूल्य. Indian Journal of Modern Research and Reviews: 2024;2(9):04-07.

कूटशब्द: वेद, सम्प्रदाय, संस्कृति, दर्शन, विभिन्न विद्वान, वाद आदि

प्रस्तावना

रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी, बल्लभाचार्य, चौतन्य महाप्रभु, रामानंद आदि आचार्य वैष्णव थे। इन लोगो के प्रयास से विभिन्न सम्प्रदाय अस्तित्व मे आये और आगे चलकर पुरे भारत मे इनके मतो का प्रचार-प्रसार हुआ । दक्षिण के अलवार भक्तो द्वारा प्रतिवपादित प्रवृतिमुलक भक्ति जो गीता, उपनिषद तथा ब्रम्हसूत्र पर आधारित थी, हिंदी के भक्ति साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया। कबीर ने इस तथ्य को प्रकट करते हुए कहा है कि- "भक्ति द्रविडी उपजी लाये रामानंद, परगट किया कबीर ने सात दीप नौ खंड"[1] बारह अलवार भक्तो के बाद दक्षिण मे चार आचार्य हुए जिन्होने अद्वेतवाद का खण्डन करके भक्तिमार्ग का पथ प्रशस्त किया जिनमे आचार्य रामानुज सबसे महत्वपूर्ण एवम प्रभावशाली थे। इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैतवाद कहलाता है। इन्होने दास्य भाव की भक्ति का प्रचार किया। प्रपति तथा शरणागतिपरक भक्ति इन्ही की देन है। इनकी भक्ति मे 'विष्णु और नारायण' नामो की प्रधानता मिलती है जिसके अनुसार इसी परमपरा मे रामानंद का नाम आता हैं जिन्होने 'राम' की भक्ति भावना का प्रचार किया. इन्होने भक्ति का द्वार सबके

© 2024 डॉ. मो. मजीद मियाँ. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लिए खोल दिया जिससे समाज के सभी वर्ग के लोग जैसे अनंतानंद, सुखानंद, सुरसुरानंद, नरहर्यानंद, भवानंद, पीपा, कबीर, सेन, धन्ना, रैदास, पद्मावती और सुरसरी नामक इनके बारह शिष्य बने थे। रामानंद ने सगुण-निर्गुण राम को भाक्ति का आधार बनाकर राम काव्य का विकास किया. मधवाचार्य ब्रम्ह सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। जिनका कार्यक्षेत्र कर्नाटक और महाराष्ट्र था । इनके सिद्धांत को द्वेतवाद कहा जाता है। यह माधुर्य भाव की उपासना करते थे तथा इश्वर, जीव और जगत मे तात्विक भेद मानते हुए जगत को सत्य मानते कृष्ण के उपासक मध्वाचार्य का प्रभाव चौतन्य महाप्रभु पर मुख्य रुप से पडा था। निम्बार्काचार्य का सिद्धांत द्वैताद्वतवाद अथवा भेदाभेदवाद कहलाता है। इनके विचार से जीव, जगत और ब्रम्ह एक-दूसरे से भिन्न है फिर भी जीव और जगत का अस्तित्व प्रभु की इच्छा पर निर्भर है। जीव अवस्था भेद ब्रम्ह से भिन्न भी है, अभिन्न भी, ब्रम्ह जगत का निमितोपादान कारण है। जीव और ब्रम्ह का सम्बंध अंश-अंशी का है। निम्बार्क से ही हिंदी मे राधा वल्लभ और हरिदासी सम्प्रदाय का विकास हुआ है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी हित हरिवंश थे तथा वृन्दावन मे हरिदास ने सखी सम्प्रदाय की स्थापना की थी। विष्णुस्वामी को विष्णु सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। इसी सम्प्रदाय मे आचार्य वल्लभ हुए थे जो उच्च कोटि के दार्शनिक चिंतक और संत थे। वृन्दावन मे श्रीनाथ जी के मंदिर की स्थापना इन्होने ही की और शुद्धाद्वैतावाद का प्रतिपादन किया। शंकराचार्य के अद्वैतवाद का इन्होने खण्डन किया और ब्रम्ह की व्यापकता को प्रतिष्ठित किया। इनकी भक्ति को पुष्टिमार्गी कहते हैं। पुष्टि का अभिप्राय, पोषण अथवा इश्वर का अनुग्रह प्राप्त होना है। 'पुष्टिम तदनुग्रहरू". दिव्य गुणो से सम्पन्न कृष्ण भगवान को इन्होने पुरुषोतम्ब्रम्ह माना है।[2] अपने पुत्र विट्ठलनाथ के सहयोग से इन्होने अष्टछाप की स्थापना की जिसमे आठ भक्त कवि थे सूरदास, कुम्भनदास, परमाननददास, कृष्णदास, तो वल्लभ के शिष्य थे। बाकी के चार नंददास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास विट्ठलनाथ के शिष्य थे. इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी का भक्ति साहित्य दक्षिण से प्रभावित है। संतकाव्य, रामकाव्य और कृष्णकाव्य प्राचीन भारतीय परम्परा का स्वाभविक रुप एवम इस युग का सूफी काव्य मुस्लमानो की देन है।

इनकी उत्पति के सम्बंध मे अनेक प्रकार के अपवाद प्रचलित हैं। कहते हैं, काशी मे स्वामी रामानंद का एक भक्त ब्राम्हण था जिसकी विधव कन्या को स्वामी जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद भूल से दे दिया. फल यह हुआ कि उसे एक बालक उत्पन्न हुआ जिसे वह लहरतारा के ताल के पास फेक आइ थी। जिसे निरु और निमा नामक जुलाहे अपने घर ले आए थे जो बालक आगे चलकर कबीरदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ. कहते हैं कि आरम्भ से ही कबीर मे हिंदू भाव से भक्ति करने की प्रवृति लक्षित होती थी। वे राम-राम जपा करते थे औ कभी-कभी माथे पर तिलक भी लगा लेते थे। इससे सिद्ध होता है कि उस समय मे स्वामी रामानंद का प्रभाव खूब बढ़ रहा था और छोटे-बडे, उंच-नीच सब तृप्त हो रहे थे। अतरू कबीर पर ऐसे भक्ति का यह प्रभाव बाल्यावस्था से ही यदि पड़ने लगा हो तो कोई आश्चर्य की बात नही। रामानंद जी के महात्म्य को सुनकर कबीर के हृदय मे शिष्य होने की लालसा जगी होगी। ऐसा प्रसिद्ध है कि एक दिन वे एक पहर रात रहते ही पंचगंगा घाट की सीढियो पर जा पडे जहाँ से रामानंद जी स्नान करने के लिए उतरा करते थे। स्नान को जाते समय अंधेरे मे रामानद जी का पैर कबीर के उपर पड गया. रामानंद जी बोल उठे, 'राम-राम कह और कबीर ने इसी को गुरुमंत्र मान लिया। यही से उन्होने रामाननद को अपना गुरु माल लिया। इसके ठीक विपरित कुछ लोगो का कहना है कि कबीर मुस्लिम पंथी थे। उनका कहना है कि कबीर ने प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख तकी से दिक्षा ली थी और उन्ही को कबीर का गुरु मानते हैं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर्दास के काव्य और व्यक्तितिव का आकलन करते हुए लिखा है। "कबीर की उक्तियो मे कही-कही विकक्षण प्रभाव और चमत्कार है. प्रतिभा उनमें बडी प्रखर थी, उसमे संदेह नही कबीर की विलक्षण प्रतिभा पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है। "हिंदी साहित्य के हजार वर्षो के इतिहास मे कबीर जैसा व्यक्तित्व लेखर एसा कवि उत्पन्न नही हुआ है।"[3] भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधि कार था, वे वाणी के डिक्टेटर थे। उनके संत रूप के साथ ही उनका ककविरुप बराबर चलता रहता है। कबीर की जितनी भी रचनाए मिलती है उनके शिष्यो ने उसे बीजक नामक ग्रंथ मे संकलित किया है। इसी बीजक के तीन भाग है। साखी, शब्द और रमैनी। साखी मे संग्रहित साखियों की संख्या 809 है सबद के अंतर्गत 350 पद संकलित है। साखी शब्द का प्रयोग कबीर ने संसार की समस्याओ को सुलझाने के लिए किया है. सबद कबीर के गेय पद है। रमैनी के ईश्वर सम्बंधी, शरीर एवम आत्मा उद्धार सम्बंधी विचारो का संकलन है. कबीर के निर्गुण भक्ति मार्ग के अनुयायी थे और वैष्णव भक्त थे. रामानंद से शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण कबीर के हृदय में वैष्नवो के लिए अत्यधिक आदर था. कबीर ने धार्मिक पाखण्डो, सामजिक कुरीतियो, अनाचारो, पारस्परिक विरोधो आदि को दूर करने का सराहनिय कार्य किया है. कबीर की भाषा मे सरलता एवम सादगी है, उसमे नूतन प्रकाश देने की अद्भुत शक्ति है। उनका साहित्य जन-जीवजन, जीवन को उन्नत बनाने वाला, मानवतावाद का पोषक, विश्व-बंधुत्व की भावना जाग्रित करने वाला है. इसी कारण हिंदी संत काव्यधारा में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

जैसा कि वे एक निम्न जाति जुलाहा से संबंध रखते थे कबीर दास अपने विचारों को प्रचारित करने में कड़ी मेहनत करते थे। वे कभी भी लोगों में भेदभाव नहीं करते थे चाहे वो वैश्या, निम्न या उच्च जाति से संबंध रखता हो। वे के अनुयायियों के साथ सभी को एक साथ उपदेश दिया करते थे। ब्राह्मणों द्वारा खुद उनका अपने उपदेशों के लिये उपहास उड़ाया जाता था लेकिन वे कभी उनकी बुराई नहीं करते थे इसी वजह से कबीर सामान्य जन द्वारा बहुत पसंद किये जाते थे। वे अपने दोहो के द्वारा जीवन की असली सच्चाई की ओर आम जन के दिमाग को ले जाने की शुरुआत कर चुके थे- "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान, मोल करो तरवार का पड़ा रहन दो म्यान।"[4] वे हमेशा मोक्ष के साधन के रूप में कर्मकाण्ड और सन्यासी तरीकों का विरोध करते थे। उन्होंने कहा कि अपनों के लाल रंग से ज्यादा महत्व है अच्छाई के लाल रंग का। उनके अनुसार, अच्छाई का एक दिल पूरी दुनिया की समृद्धि को समाहित करता है एक व्यक्ति दया के साथ मजबूत होता है, क्षमा उसका वास्तविक अस्तित्व है तथा सही के साथ कोई व्यक्ति कभी न समाप्त होने वाले जीवन को प्राप्त करता है। कबीर ने कहा कि भगवान आपके दिल में है और हमेशा साथ रहेगा। तो उनकी भीतरी पूजा कीजिये। उन्होंने अपने एक उदाहरण से लोगों का दिमाग परिवर्तित कर दिया कि अगर यात्रा करने वाला चलने के काबिल नहीं है, तो यात्री के लिये रास्ता क्या करेगा - "जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ, मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।"[5] उन्होंने लोगों की

© 2024 डॉ. मो. मजीद मियाँ. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आँखों को खोला और उन्हें मानवता, नैतिकता और धार्मिकता का वास्तविक पाठ पढ़ाया। वे अहिंसा के अनुयायी और प्रचारक थे। उन्होंने अपने समय के लोगों के दिमाग को अपने क्रांतिकारी भाषणों से बदल दिया। कबीर के पैदा होने और वास्तविक परिवार का कोई पुख्ता प्रमाण मौजूद नहीं है। कुछ कहते है कि वो मुस्लिम परिवार में जन्मे थे तो कोई कहता है कि वो उच्च वर्ग के ब्राह्मण परिवार से थे। उनके निधन के बाद हिन्दू और मुस्लिमों में उनके अंतिम संस्कार को लेकर विवाद हो गया था। उनका जीवन इतिहास प्रसिद्ध है और अभी तक लोगों को सच्ची इंसानियत का पाठ पढ़ाता है- "दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार, तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डा।"[6] कबीर दास के अनुसार, जीवन जीने का तरीका ही असली धर्म है जिसे लोग जीते है ना कि वे जो लोग खुद बनाते है। उनके अनुसार कर्म ही पूजा है और जिम्मेदारी ही धर्म है। वे कहते थे कि अपना जीवन जीयो, जिम्मेदारी निभाओ और अपने जीवन को शाश्वत बनाने के लिये कड़ी मेहनत करो। कभी भी जीवन में सन्यासियों की तरह अपनी जिम्मेदारियों से दूर मत जाओ। उन्होंने पारिवारिक जीवन को सराहा है और महत्व दिया है जो कि जीवन का असली अर्थ है। वेदों में यह भी उल्लिखित है कि घर छोड़ कर जीवन को जीना असली धर्म नहीं है। गृहस्थ के रुप में जीना भी एक महान और वास्तविक सन्यास है। इंसानियत का क्या धर्म है जो कि किसी को अपनाना चाहिये- "हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना, आपस में दोउ मुए लडि - लडि, मरम न कौ जान।'[7] कबीर के गुरु रामानंद ने उन्हें गुरु मंत्र के रुप में भगवान 'रामा' नाम वे अपने गुरु की दिया था जिसका उन्होंने अपने तरीके से अर्थ निकाला था। तरह सगुण भक्ति के बजाय निर्गुण भक्ति को समर्पित थे। उनके रामा संपूर्ण शुद्ध सच्चदानंद थे, दशरथ के पुत्र या अयोध्या के राजा नहीं जैसा कि उन्होंने कहा- "दशरथ के घर ना जन्में, ई चल माया किनहा"।[8] वो इस्लामिक परंपरा से ज्यादा बुद्धा और सिद्धा से बेहद प्रभावित थे। उनके अनुसार "निर्गुण नाम जपो रहे भैया, अविगति की गति लाखी ना जैया"। उन्होंने कभी भी अल्लाह या राम में फर्क नहीं किया, कबीर हमेशा लोगों को उपदेश देते कि ईश्वर एक है बस नाम अलग है। वे कहते है कि बिना किसी निम्न और उच्च जाति या वर्ग के लोगों के बीच में प्यार और भाईचारे का धर्म होना चाहिये। ऐसे भगवान के पास अपने आपको समर्पित और सौंप दो जिसका कोई धर्म नहीं हो। वो हमेशा जीवन में कर्म पर भरोसा करते थे। भारतीय समाज की जटिल संरचना और बदलते सामाजिक प्रतिमानों के कारण कबीर के अध्ययन की पद्धति में बदलाव आता रहा है कबीर की अध्ययन की पद्धति बहुधा प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों से प्रभावित होती रही है। समाज सुधारक, उपदेशक से लेकर कबीर के समाज विरोधी स्वरूप की व्याख्या समय-समय पर होती रही है। हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल है कि क्या कबीर का कोई साहित्यिक महत्व है जिसके आधार पर हम उनका अध्ययन हिन्दी साहित्य में करें? अगर कबीर का मूल कार्य समाज सुधार या उपदेशक पर ही केन्द्रित था तो निश्चित रूप से आचार्य शुक्ल नाथों, सिद्धों और जैनों के साहित्य की तरह कबीर को साहित्य में शामिल करते। असल में कबीर को साहित्य के भीतर जगह देने में आलोचकों को कभी असुविधा नहीं हुई बल्कि समस्या यह रही कि कबीर का साहित्यिक स्थान कितना बड़ा हो यह तय करने में.....

आज के मशीनी युग भी आवश्यकता कबीर के धर्म, उनकी सहज भक्ति से प्रेरणा लेने की है. जिसमे कोई जजटिलता नही है. हृदय से प्रभु को नमस्कार करो ।

उसके दिये जिवन, सुख-दुख का सम्मान करो. उसे सत्कर्यो मे लगाओ। कबीर के धर्म मे निरर्थक पाखण्डो और कर्माण्डो के लिए कोई स्थान नही था। इस मार्ग पर चलकर मनुष्य आज भी वास्तविक मानसिक शांति पा सकता है। अन्यथा तीर्थो, मंदिरो, मस्जिदो, गुरुद्वारो मे भक्तो की भीड तो उमडी रहती है, किंतु कोई पूर्णतया सुखी नही दिखायी देता, क्योंकि उनके सुख और संतुष्टि भी भौतिक इच्छाओ के दायरे मे सिमटे हैं और उन्हे वास्तविक संतोष का अनुभव हुआ ही नही है। वह इश्वर की उपासना करके भी धन-सम्पति, भौतिक सुख-सुविधाए ही मंगता है. वास्तविक सुख का न तो उन्हे अनुभव है, न ही उसकी कामना है। कबीर का धर्म उन्हे उस सुख का नौभव कराने में समर्थ है। कबीर ने 'अपने 'साहब' ईश्वर की पहचान बताई और कहा कि मेरा वही एक भगवान है और उसी को समर्पण करते हैं- "जन्म-मरन से रहित है, मेरा साहिब सोय, बलिहारी उस पीव की, जिन सिरजा सब कोय"[9] कितना सरल है कबीर का धर्म, कितनी सहज है उनकी भक्ति और कितने सुलभ हैं कबीर के ईश्वर. उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होत है कि कबीर किसी धर्म - विशेष के प्रति दुराग्रह नही खते थे, बल्कि उनका विरोध धर्म की आड लेकर हो रहे पाखण्डो, उस कट्टर्ता से था, जो धर्म का वास्तविक उद्देश्य नही था। उनकी दृष्टि मे धर्म न तो पूजा-पाठ मे है, न ही दूसरे धर्मो की निरर्थक आलोचना मे मोक्ष की कामना करने वाले के मन मे सच्ची भक्ति होनी चहिए, इसीलिए उन्होने धर्म मे वैचारिक स्तर पर सुधार के लिए अपने स्तर पर तिब्र प्रयास किये किसी भी समाज की मूलभूत विशेषता उसकी धर्म-सम्बंधी धारणाए, मन्यताए, परम्पराए होती है। धर्म ही व्यक्ति के व्यवहार, सोच को स्पष्टतरू प्रभावित करता है। कबीर के स्नान-संध्या धर्म नही, बल्कि अच्छे विचार और अच्छे कर्म-धर्म होते हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रुप से हम यही कह सकते हैं कि धर्म का केवल सुबह-शाम अनुसार नाम लेकर यदि किसी को सताया जा रहा है, तो ईश्वर की दृष्टि मे इससे बडा पाप और कोई नही हो सकता। किसी भी व्यक्ति की शारीरिक-मानसिक पीडा का कारण यदि धर्म को बनाया जा रहा है, तो वह उसका दुरुपयोग है। धर्म सभी को समानतापूर्वक, सस्म्मान जीने के अवसर देता है। धर्म का उद्देश्य आपस मे लोगो को जोडना होता है, दुरिया न तो पैदा करत है, न ही उन्हे बढावा देता है। आधुनिक युग मे धर्म मे भी कबीर के दृष्टिकोण को आदर्श मानकर सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि आज मनुष्य की सारी सोच - सामथ्र्य धर्म के आडम्बरो मे ही व्यर्थ हो रही है. इसीलिए वह न तो अपने लिए और समाज के लिए कुछ सकारात्मक कर पाता है. कबीर का ध्येय लोगो को दैनिक संकीर्णताओ से उपर उठाकर उनमे मानवीयता व एकता की भावना का संचार करने का रहा है। उनमे और अन्य संत-सुधारको मे एक मौलिक अंतर यही रहा है कि उनकी सुधार की भाषा भी अत्यंत तीखी रही और सम्भवतरू कटाक्षपूर्ण होनेहोने के कारण अधिक असरदार रही। जो आज रासंगिक है. आज फिर से कबीर की आवश्यकता है, जो दुसरो को समझा सके, उन्हे सही मार्ग दिखाकर उस पर चलने को बाध्य कर सके। प्यार से नही, तो डांट-फटकार कर...

© 2024 डॉ. मो. मजीद मियाँ. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ:

1. डॉ नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. साहित्य सरोवर; 2020.
2. डॉ सुराना अ. भारतीय संस्कृति में धर्म एवं अध्यात्म. जयपुर: संस्कार पब्लिकेशंस; 2015.
3. प्रो युगेश्वर. कबीर समग्र. विजय प्रकाश बैरी; 2001..
4. वही
5. श्यामसुंदर दास. कबीर-ग्रंथावली. प्रयाग: इंडियन प्रेस लिमिटेड; 2001.
6. वही
7. वही
8. डॉ पारसनाथ तिवारी. कबीर वाणी संग्रह. इलाहाबाद: राका प्रकाशन; 2010 .
9. वही

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. मो. मजीद मियाँ. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/